84 जन्म तो हैं ही। बाकी यह जो तुम्हारा जन्म है यह है ही गुप्त। यह जो तुमको समझाते हैं वो तो शिवबाबा है; परन्तु है तो वो निराकार ना। वो यह नहीं समझते हैं कि हम आत्मा हैं और इसलिए ही वो हम सबका बाबा है और हम सब आत्माएँ भाई–2 हैं। फादरहुड नहीं कहा जाता है। अगर फादरहुड होता तो कृष्ण को कोई भी याद ना करते। भाई–2 हैं; इसलिए कृष्ण को याद करते हैं। आत्मा भी गुप्त है ना। किसको पता ही नहीं निराकार बाप आकर पढ़ाते हैं। गीता में भी भूल कर दी है कि कृष्ण भगवान है। तो अब परमात्मा कहते हैं कि मैं तुमको राजयोग सिखाता हूँ। अब यह भी कहते हैं रुद्र ज्ञान यज्ञ से ही विनाश ज्वाला उत्पन्न हुई। तो अब रुद्र तो कृष्ण को कह नहीं सकते और यज्ञ में तो ब्राह्मण चाहिए ना। कृष्ण तो हो ना सके। सारी दुनिया में ही कृष्ण को भगवान मानते हैं। अब तुम समझते हो भगवान तो निराकार है। भगवान कहते हैं मैं भी गुप्त हूँ। अब तुम बच्चों को पारस बुद्धि बनना है। बाप कहते हैं। अब बाप बताते हैं कि धर्मों के नाम भी शरीरों पर ही पड़ते हैं। आत्मा कब भी फारसी, गुजराती नहीं कहलाती है। तुम अपने को आत्मा समझो। बाप तुमको सुख देते हैं। माम् एकम् याद करो। अब तुम ही जानते हो हम आत्मा शिवबाबा के बच्चे हैं। तुमको समझाया भी जाता है कि आत्मा के लिए धर्म आदि की कोई बात नहीं है। सब ही ब्रदर्स हैं। मैं फलाना हूँ, मैं पारसी हूँ, यह सब देह के धर्म हैं। अब बाप कहते हैं कि बच्चे, इस अन्तिम जन्म में पवित्र ज़रूर ही बनना है। रावण ने तुमको ढाई हज़ार सालों से अपवित्र बना रखा है। तो अब तुम बने हो राम के। अब तुम सम्मुख बैठे हुए हो। नशा चढ़ता है? शिवबाबा हमको पढ़ाते हैं। अब बाप समझाते हैं कि मेरे मीठे–2 बच्चों, अब तुम पतित ना बनो। तुम पुकारते ही आते हो कि आकर हमें पावन दुनिया में ले चलो। अब यह अन्तिम जन्म पावन बने तो पावन दुनिया के मालिक बनोगे। यह बाप रोज़ ही पढ़ाते और समझाते ही रहते हैं। अब कहते हैं– बच्चों, बाप को पूरा–2 याद करो तो कल्प–कल्पांतर के लिए वो ही पार्ट नूँधा जावेगा और फिर बाप को याद करते–2 तुम बाप के घर पर पहुँच जाओगे। तुम बच्चे 84 जन्मों का चक्र काटोगे, फिर 5000 साल बाद आकर मिलोगे। अब यह देह की सब बातें छोड़ अपने को आत्मा समझ मुझको याद करो। पतितपना छोड़ दो। भगवान का यह फरमान है आय कर फिर हाथ छोड़ ना जाना। अब अगर पावन ना बनेंगे तो कल्प–2 ही ऐसा ही होता रहेगा। तुमको पतित दुनिया से अंदरूणी घृणा आनी चाहिए। तब ही सच्चा त्याग हो सकता है। अब बाप कहते हैं– बच्चों, मैं आया हूँ, तुम सुख घनेरे ले लो। बाप को याद करेंगे तो 16 कला सम्पूर्ण बनोगे और माला के दाने बन जाओगे और फिर तुम विश्व पर राज्य करोगे। बाप कहते हैं, तुम बच्चों के लिए स्वर्ग स्थापन कर रहा हूँ। बाप तुम्हारा निराकार है। स्वर्ग में जाने के लिए निराकार शिवबाबा को याद करो। अब बाप बच्चों को समझानी देते हैं कि सिकीलधे बच्चों, आपस में अगर एक/दो को दुख देंगे तो दुखी होकर मरोगे। मुख से इतना भी ना बोलना है कि फलाना ऐसा है, नहीं तो अपना बना–बनाया पद खो दोगे। अंत में सबको साक्षात्कार हो जावेगा। अब यहाँ तुमको बाप ब्रह्मा के द्वारा बाप का वर्सा मिलता है। अब बाप आते ही हैं पावन बनाने के ही लिए। आकर समझो। आत्माओं को परमपिता परमात्मा बाप बैठ समझाते हैं। यह है रूहरिहान। दूसरा कोई भी इस रूह–रिहान को समझ ही नहीं सकते हैं। रूह ही है जो शरीर के द्वारा, अब रूह ही है जो कि पतित बनती है। आत्मा ही कहती है कि हम एक शरीर छोड़ दूसरा लेती हूँ। बाप कहते हैं कि बच्चे, पूरा पुरुषार्थ कर मेरे से पूरा वर्सा लेकर देखो और आप समान भी बनाते रहो। सन्यासियों का है हद का वैराग। घरबार छोड़ जगल में जाकर बैठते हैं। तुम्हारा है घर बैठे सारी दुनिया का वैराग। तुम जानते हो नाटक पूरा होता है। यह पुरानी दुनिया विनाश होनी है। अब हमको वापस अपने घर जाकर पार्ट बजाना है। यह है बेहद का वैराग। ओम।